Regd. with Registrar of News Papers of India of PUN BIL 2002/07848: Postal Reg.No.GDP-41/2023-2025

Vol:23
Issue:06

Monthly

ANSARULLAH

MAJLIS ANSARULLAH BHARAT

मासिक अन्सारुल्लाह क़ादियान

Qadian

2025
June

Date of Publication : 10-06-2025

www.ansarullahbharat.in | Editor: Hafiz Syed Rasool Niyaz | Honorary Editor: H.Shamsuddin

मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत की मुखपत्रिका
मासिक
अन्सारुल्लाह
क़ादियान

जून 2025 ज़ुल हिज्जा 1404 हि.श.	**प्रबंधक** अताउल मुजीब लोन	**संस्करण–23** **अंक -06**

सम्पादक : सय्यद रसूल नियाज़ | **एज़ाज़ी सम्पादक :** एच्.शम्सुद्दीन

स.सम्पादक(हिन्दी) : वसीम अहमद अज़ीम

संपादन मंडल
सय्यद कलीम अहमद अजबशेर
मोहम्मद इब्राहीम सरवर
मैनेजर
अज़ीज़ अहमद नासिर
9682536974
प्रेस
फ़ज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रेस
क़ादियान
वार्षिक मूल्य :₹ 250
विदेश: $ 50
प्रकाशन स्थान
ऐवाने अन्सार, भारत
क़ादियान 143516
जिला : गुरदासपुर, पंजाब
फोन : 7837985190
Email:
ansarullah@qadian.in
WEB LINK
https://www.ansarullahbharat.in/Publications/

विषय सुचि	पृष्ठ
सम्पादकीय	2
عِبَادُ الرَّحْمٰن	2
दर्सुल क़ुरआन	3
दर्सुल हदीस	6
हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम	8
हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ के फ़रमूदात	10

संपादकीय

"आखरी ज़माने का एक सज्दा!"

इबादुर्रहमान

हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ फ़रमाते हैं:

"हम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जमाअत के प्रतिनिधि (सफ़ीर) हैं और हमारा उद्देश्य दुनिया में ख़ुदा और रसूल ﷺ की बादशाहत क़ायम करना है। आज की दुनिया में यह एक बहुत बड़ी चुनौती है, और इस चुनौती को हर अहमदी को स्वीकार करना चाहिए कि ख़ुदा हमें सच्चा इबादतगुज़ार और एक ख़ुदा को मानने वाला (मुवह्हिद) बनने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।"

(ख़ुत्बा जुमा 30 नवम्बर 2007)

अल्लाह से संबंध या ख़ुदा के करीब होना हमेशा इस्लाम की एक विशेषता रही है। या यूँ कहें कि अल्लाह से गहरा संबंध ही इस्लाम धर्म का सार है। क़ुरआन में अल्लाह का फ़रमान है: "सज्दा कर और करीब हो जा।" (अल-अलक़: 20) इस छोटी सी आयत में अल्लाह ने अपने करीब होने का एक बड़ा रहस्य बताया है। इस बात को एक हदीस में यूँ समझाया गया है कि: "इंसान अपने रब के सबसे ज्यादा करीब उस समय होता है जब वह सजदे में होता है।" इसलिए, सजदे में बहुत दुआ किया करो। एक बार नबी अकरम ﷺ ने फरमाया: "अपने ऊपर सजदे को अधिक करने की आदत डालो और इस तरह मेरी मदद करो।" (मुस्लिम, किताबुस-सलात) क़ुरआन-ए-करीम में सज्दा का मतलब सिर्फ़ शरीर को झुकाना नहीं, बल्कि पूरी तरह आज्ञा मानना है। चाहे फ़रिश्तों के सजदे की बात हो या हज़रत यूसुफ़ के ख्वाब में सितारों के सज्दा करने का ज़िक्र हो। हर जगह सज्दा आज्ञाकारिता और मोहब्बत का प्रतीक है। हम अहमदी मुसलमान बहुत सौभाग्यशाली हैं कि हमें ख़िलाफ़त का वह निज़ाम (सिस्टम) मिला है, जिसने हमें न सिर्फ़ बाहरी सज्दा करना सिखाया बल्कि सजदे की असली आत्मा यानी सच्ची आज्ञा पालन की भावना भी दी। हज और ईद-उल-अज़्हा की जो क़ुर्बानी होती है, वह भी इसी सजदे की एक जीवंत तस्वीर है। ख़िलाफ़त की आज्ञा मानते हुए किया गया एक सज्दा, नबी ﷺ के अनुसार, "दुनिया और उसमें जो कुछ है उन सबसे भी ज्यादा क़ीमती होता है।" (बुखारी, बाब नुज़ूल-ए-ईसा इब्न-ए-मरयम) इस सिलसिले में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं: "अल्लाह की ग़ैरत (गरिमा) का तक़ाज़ा है कि इन नकली खुदाओं की खुदाई को मिटा दिया जाए और ज़िंदा और मुर्दा के बीच एक फर्क रखा जाए ताकि दुनिया सच्चे खुदा के सामने सज्दा करे। इसी मक़सद के लिए अल्लाह ने मुझे भेजा है और अपने निशानों (चमत्कारों) के साथ भेजा है।"(फ़तावा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम, पृष्ठ 117-118)

(एच. शमसुद्दीन)

दर्सुल क़ुरआन

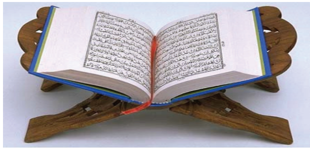

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस र.ह

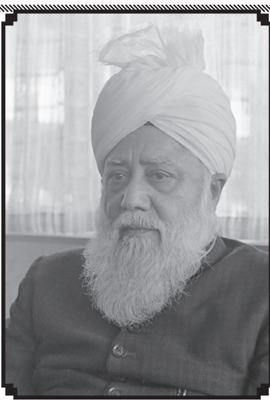

दुआ के बिना

इलाही सिलसिले कोई सफ़लता प्राप्त नहीं कर सकते!

قُلْ مَا يَعْبَؤُا بِكُمْ رَبِّيْ لَوْلَا دُعَآؤُكُمْ فَقَدْ كَذَّبْتُمْ فَسَوْفَ يَكُوْنُ لِزَامًا ۝

"तू कह दे कि अगर तुम्हारी दुआ न होती, तो मेरा रब तुम्हारी कोई परवाह न करता। लेकिन अब तो तुम उसे झुठला चुके हो, इसलिए उसका अज़ाब (प्रकोप) तुमसे चिमट जाने वाला है।"

(सूरह अल-फ़ुरक़ान : आयत 78)

इलाही सिलसिले में दुआ के बिना कोई भी सफलता हासिल नहीं की जा सकती। इसी लिए ख़ुदा तआला सूरह फ़ुरकान के आख़िरी हिस्से में फ़रमाता है:

قُلْ مَا يَعْبَؤُا بِكُمْ رَبِّيْ لَوْلَا دُعَآؤُكُمْ فَقَدْ كَذَّبْتُمْ فَسَوْفَ يَكُوْنُ لِزَامًا

"कहो कि मेरा रब तुम्हारी कोई परवाह नहीं करता अगर तुम उससे दुआ न करो। तुम तो झुठला ही चुके हो, अब तो सज़ा अवश्य होगी।" (सूरह फ़ुरकान: 78)

अरबी भाषा में "لَوْلَا دُعَآؤُكُمْ" के कई मतलब होते हैं "उसने पुकारा", "उसकी ओर रुचि की", "उससे मदद माँगी"। इन अर्थों के अनुसार इस आयत का भाव यह होगा कि जब तक तुम ख़ुदा तआला को अपना एकमात्र लक्ष्य, उद्देश्य और प्रियतम मानते हुए उसकी मदद और सहायता के लिए उसे नहीं पुकारोगे, तब तक ख़ुदा की नज़र में तुम्हारी कोई अहमियत नहीं होगी। "يَعْبَؤُا" के चार अर्थ बनते हैं:

प्रथम यह कि जब तक तुम विनम्रता और गहराई से ख़ुदा के सामने नहीं झुकोगे, उससे सहायता नहीं माँगोगे, और उसकी सम्पूर्ण शक्ति पर भरोसा नहीं रखोगे, और यह यक़ीन नहीं करोगे कि उसके फ़ज़्ल के बिना कोई सफलता नहीं मिल सकती, तब तक ख़ुदा की नज़र में तुम्हारा कोई मूल्य नहीं होगा।

يَعْبَؤُا के दूसरे अर्थों के अनुसार अल्लाह तआला इस आयत में यह फरमाता

है कि जब तुम दुआ नहीं करोगे, तो ख़ुदा तुम्हारी बक़ा (स्थायित्व) के साधन नहीं बनाएगा। مَا يَبْقِيكُمْ لَوْ لَا دُعَاؤُكُمْ अर्थात विनम्रतापूर्वक दुआओं के बिना तुम्हारे लिए सामर्थ्यवान ख़ुदा के जलवे ज़ाहिर नहीं होंगे। तीसरे अर्थों के अनुसार "قُلْ مَا يَعْبَؤُا بِكُمْ رَبِّى" कि तुम्हारी योजनाएँ तब तक सफल नहीं हो सकतीं जब तक आसमान से ख़ुदा के फ़रिश्तों की मदद न आए।

अल्लाह तआला फरमाता है कि यदि तुम चाहते हो कि मेरे आदेश और आज्ञा से आसमान से फ़रिश्तों की सेना उतरे और तुम्हारी मदद करे, तो तुम्हें दुआ के ज़रिए इसे पाना होगा। क्योंकि "عَبَأْتُ الْجَيْشَ" के अर्थ हैं — "सेना को तैयार करना"। अर्थात सेना को तैयार कर दिया और उसे आदेश दिया कि जिस उद्देश्य के लिए उसे तैयार किया गया है उसकी प्राप्ति के लिए बाहर निकले।

चौथे "حميت" यानी "ग़ैरत" (स्वाभिमान) के अनुसार इस आयत का मतलब यह है कि ख़ुदा तब तक तुम्हारे लिए ग़ैरत नहीं दिखाएगा, जब तक तुम दुआओं के ज़रिए उसकी ग़ैरत को जगाने की कोशिश न करो।

हज़रत मसीह मौऊद (अलैहिस्सलाम) ने भी एक जगह फ़रमाया:

"अब ग़ैरों से लड़ाई के मआनी ही क्या हुए
तुम ख़ुद ही ग़ैर बन के महल्ले सज़ा हुए"

(तौहफ़ा गोलड़वीया, ज़मीमा पृ. 26, सन 1902, रूहानी ख़ज़ाइन जिल्द 17, पृ. 79)

अत: यहाँ ख़ुदा तआला फ़रमाता है कि इस ग़ैरियत की दीवार को सिर्फ़ दुआ ही चीर सकती है। अगर तुम दुआओं के ज़रिए और मेरी मोहब्बत के वास्ते मेरी मदद और नुसरत के तलबगार बनोगे, तो मैं ऐसे साधन पैदा कर दूँगा कि हमारे बीच कोई दूरी बाक़ी नहीं रहेगी। तब मेरी ग़ैरत (स्वाभिमान) तुम्हारे लिए जोश में आएगी और तुम अपने मक़सद को पा सकोगे।

अत: इस एक छोटी सी आयत में ख़ुदा तआला ने बहुत विस्तृत विषय बयान किए हैं, जिन्हें संक्षेप में बताया गया है। फिर ख़ुदा तआला फ़रमाता है: "فَقَدْ كَذَّبْتُمْ" यानी, अगर तुम दुआ की तरफ़ ध्यान नहीं देते और ख़ुदा की पुकार पर लब्बैक कहकर उस जमाअत में शामिल नहीं होते जो सुबह-शाम दुआओं में लगी रहती है, तो तुम इस हक़ीक़त को झुठला रहे हो कि दुआ के बिना न कोई अमल ख़ुदा की नज़र में

वज़न रखता है और न कोई इंसान या क़ौम ख़ास दर्जा पा सकती है।

तुम इस बात को भी नकार रहे हो कि तुम्हारी मदद के लिए क़य्यूम (हमेशा बाक़ी रहने वाला) ख़ुदा के हुक्म, मर्ज़ी और इरादे की ज़रूरत है।

तुम ये भी नहीं मानते कि इंसान तब ही कामयाबी हासिल कर सकता है जब उसके मक़सद को पूरा करने के लिए आसमान से फ़रिश्ते नाज़िल हों और इंसानों के दिलों में पाक तब्दीलियाँ पैदा करें। और जब तक तुम्हारे और ख़ुदा के बीच अजनबीपन और दूरी रहेगी, तब तक उसकी मदद नहीं आ सकती।

(ख़ुत्बात-ए-नासिर, जिल्द 1, पृ. 200-197 से)

★ ★ ★

INDIAN AUTO

हर प्रकार की मोटर गाड़ियों के पार्टस सस्ते रेट पर खरीदें।

P. Ali Koya

CALICUT (KERALA)

"शिक्षा प्राप्त करना हर मुस्लिम पुरुष एवं स्त्री का कर्त्तव्य है"

MUSTAFA BOOK CO

All kinds of Academic Book of Kerala Board, CBSE, ISCS & Universities

Fort Road

KANNUR-1 (KERALA)

Mobile : 09895655426

SONET SOLUTIONS

PRIVATE LIMITED

No.41, II Cross, Doctors Layout,
Kasturi Nagar,
BANGALORE - 560043

तालिबे दुआ :

MUSADDIQ AHMAD

Mobile : 098451-98560

Tel : +91 (80) 41636612

Web : www.sonetsolutions.in

दर्सुल हदीस

مَا الْإِحْسَانُ؟
(एहसान क्या है)

हज़रत
मुस्लेह मौऊद[रज़ि]

اَلْاِحْسَانُ اَنْ تَعْبُدَ اللّٰهَ كَاَنَّكَ تَرَاهُ
فَاِنْ لَّمْ تَكُنْ تَرَاهُ فَاِنَّهٗ يَرَاكَ

एहसान : जमाअत की हिजरी-शम्सी कैलेंडर में जून महीने का नाम "एहसान" है। इस नाम रखने की वजह यह है कि मोह्सिने आज़म (सबसे बड़े भलाई करने वाले) रसूल ﷺ इस महीने में बनू तई क़बीले के क़ैदियों को केवल इस वजह से आज़ाद कर दिया था कि वे हातिम तई की नस्ल से थे। रसूलुल्लाह ﷺ का यह नेक बर्ताव पूरी तरह एहसान (भलाई) पर आधारित था। इसी वजह से इस महीने का नाम "एहसान" रखा गया। (इदारा)

रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फरमाते हैं -: एहसान यह है कि तुम ख़ुदा की इबादत इस तरह करो जैसे वह तुम्हें सामने दिखाई दे रहा हो और अगर यह न हो सके, तो कम से कम तुम्हारे दिल में यह एहसास ज़रूर हो कि वह तुम्हें देख रहा है।

"एहसान" के दो मतलब होते हैं:-1. किसी को बिना उसकी मेहनत के या उसकी मेहनत से ज़्यादा इनाम देना, या उसके साथ भलाई करना। 2. इंसान का अपने किसी काम में पूरी कुशलता और श्रेष्ठता हासिल करना यानी उसका ज्ञान और कार्य दोनों अच्छे हों और बुराई से मुक्त हों।

मुफ़्रदात (अरबी शब्दकोश) के अनुसार, एहसान का एक पहलू है दूसरों के साथ बिना बदले की इच्छा के अच्छा व्यवहार करना, और दूसरा पहलू है खुद अपने ज्ञान और कर्म में अच्छाई को अपनाना।

हज़रत अली का कथन है :اَلنَّاسُ اَبْنَاءُ مَا يُحْسِنُوْنَ लोग उसी चीज़ के बेटे होते हैं, जिसे वे अच्छे से जानते हैं। यानी इंसान की इज़्ज़त उसी ज्ञान और काम से होती है, जिसमें वो सबसे ज़्यादा निपुण होता है। जैसे एक बढ़ई (नज्जार), एक लेखक (कातिब), या एक डॉक्टर भले ही वे दूसरे काम भी जानते हों, लेकिन उन्हें उसी काम से पहचाना जाता है जिसमें वे माहिर होते हैं।

अत: वह मोहसिन (उपकारी) है इसी तरह "اَحْسَنَ الشَّیْءَ" का मतलब होता है: किसी चीज़ को अच्छा बनाना। जैसे क़ुरआन में है: "اَلَّذِیْ اَحْسَنَ كُلَّ شَیْءٍ خَلَقَهٗ" (सज्दह: 8) जिसने हर चीज़ को पैदा किया और उसे बेहतरीन

योग्यताएँ दीं।

एहसान इनाम से अलग चीज़ है इनाम केवल दूसरों के लिए होता है, लेकिन एहसान खुद पर और दूसरों पर दोनों पर किया जा सकता है। इसलिए सारे इंसानों से अच्छा व्यवहार करना एहसान कहलाता है।

अदल (न्याय) मुफ़्रदात रागिब के अनुसार, एहसान "अद्ल" (न्याय) से ऊंची श्रेणी पर है। अद्ल यह है कि किसी को उसका पूरा हक़ दिया जाए न ज़्यादा, न कम।

लेकिन एहसान यह है कि किसी को उसके हक़ से ज़्यादा दिया जाए और लिया जाए तो उसके हक़ से कम लिया जाए।

एहसान का मतलब अच्छे काम करना, अच्छे शब्द कहना, और अच्छा ज्ञान रखना भी होता है। यह "बदसुलूकी" का उल्टा है।

"**محسن**" (अच्छा करने वाला) वह होता है जो पूरा ज्ञान रखता हो और अच्छे से अमल (कर्म) करता हो।

"**اَسْلَمَ وَجْهَهٗ وَهُوَ مُحْسِنٌ**" का मतलब है ऐसा व्यक्ति जो अपने आप को अल्लाह के हवाले कर दे और पैगंबर मुहम्मद ﷺ की पूरी तरह से आज्ञा का पालन करे।

Mobile : 9572858090, 9955553631

NEW MOBILE POINT

TABASSUM FANCY STORE

Mosabi Market No. 3, East Singhbhum

JHARKHAND Pin - 832104

पैगंबर मुहम्मद ﷺ से पूछा गया कि एहसान क्या है?

तो आपने ﷺ ने फरमाया:

"तू अल्लाह की इबादत ऐसे करे जैसे कि तू उसे देख रहा हो। और अगर ऐसा न हो सके तो कम से कम यह एहसास हो कि वह तुझे देख रहा है।" (बुखारी, किताबुल ईमान)

यह इंसान की रूहानी (आध्यात्मिक) तरक्की की पहचान है। जब इंसान को लगे कि वह खुदा के सामने खड़ा है तो उसके दिल में ताक़त और स्थिरता आ जाती है, जैसे एक भागती हुई फौज अपने राजा के सामने रुक जाती है।

हज़रत आयशा रज़ि. की रिवायत के अनुसार, जो खुद को अल्लाह के हवाले कर दे और पैगंबर ﷺ की पूरी तरह से आज्ञा का पालन करे — वह "**محسن**" होता है। एक और रिवायत के अनुसार, जो पूरी तरह से रूहानी रूप में भी खुद को अल्लाह के हवाले कर दे, यहाँ तक कि वह अल्लाह को देखे या उसके हुक्म के अनुसार उसका हर काम हो।

"**محسن**" वह भी है जिसकी निगाह केवल अल्लाह पर हो — उसकी उम्मीद किसी इंसान से न हो, और उसका व्यवहार इतना अच्छा हो कि हर व्यक्ति उसकी भलाई से लाभान्वित हो। यानी उसकी भलाई सारी दुनिया तक फैली हो।

एहसान केवल दूसरों के साथ अच्छा बर्ताव ही नहीं, बल्कि खुद को अल्लाह के हवाले करना, उसके हुक्म के अनुसार जीना, और अपने ज्ञान व कर्म में उत्कृष्टता हासिल करना भी है। यह एक उच्च आध्यात्मिक अवस्था है जो सच्चे मोमिन का लक्ष्य है।

मल्फ़ूज़ात हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

ये मुफ़्त का बहिश्त है दुनिया की जन्नत नमाज़ की लज़्ज़त है

झुको तो ऐसे जिस से साफ़ मालूम हो कि तुम्हारा दिल झुकता है और सज्दा करो तो उस व्यक्ति के समान जिस का दिल डरता है!

"नमाज़ बड़ी ज़रूरी चीज़ है और मोमिन की मेराज है। खुदा से दुआ माँगने का सबसे अच्छा ज़रिया नमाज़ है। नमाज़ इसलिए नहीं है कि सिर टकरा लें या मुर्ग़ी की तरह ठोंगे मार लें। बहुत लोग ऐसी ही नमाज़ें पढ़ते हैं और कई लोग तो सिर्फ़ दूसरों के कहने पर नमाज़ पढ़ने लगते हैं ये कुछ भी नहीं है। नमाज़ दरअसल खुदा के सामने हाज़िरी है, खुदा की तारीफ़ करने और अपने गुनाहों को माफ़ कराने का एक मिला-जुला तरीक़ा है। उस इंसान की नमाज़ हरगिज़ नहीं होती जो इस मक़सद और इरादे को ध्यान में रखे बिना नमाज़ पढ़ता है। इसलिए नमाज़ बहुत अच्छे तरीके से पढ़ो। जब खड़े हो तो ऐसे खड़े हो कि तुम्हारी हालत से साफ़ पता चले कि तुम खुदा की आज्ञा मानते हुए और उसकी बंदगी में खड़े हो। और जब झुको तो ऐसे झुको कि साफ़ दिखे कि तुम्हारा दिल भी झुक रहा है। और जब सजदा करो तो उस शख्स की तरह सजदा करो जिसका दिल खुदा के डर से काँप रहा हो। और अपनी नमाज़ों में अपने दीन और दुनिया दोनों के लिए दुआ माँगो।"

"नमाज़ को अच्छे से अदा करो और खुदा के दुश्मनों से कोई समझौता न करो।

वफ़ा और सच्चाई का ख्याल रखो। अगर तुम्हारा पूरा घर भी बर्बाद हो रहा हो, तब भी नमाज़ को मत छोड़ो। वे लोग काफ़िर और मुनाफ़िक़ होते हैं जो नमाज़ को मन्हूस कहते हैं और कहते हैं कि नमाज़ शुरू करने के बाद हमें ये-ये नुकसान हुआ है। नमाज़ कभी भी खुदा के प्रकोप का कारण नहीं होती। जो लोग इसे मन्हूस कहते हैं, दरअसल उनके अंदर ही ज़हर होता है। जैसे बीमार को मिठास कड़वी लगती है, वैसे ही उन्हें नमाज़ का स्वाद नहीं आता।

नमाज़ इंसान के दीन को, उसके अख़लाक़ को और उसकी दुनिया को सही करती है। नमाज़ का आनंद दुनिया की हर खुशी से बढ़कर है। शारीरिक सुखों के लिए हज़ारों खर्च किए जाते हैं, और उनका नतीजा कई बार बीमारियाँ होता है लेकिन नमाज़ एक मुफ़्त की जन्नत है, जो उसे मिलती है।"

"कुरआन शरीफ़ में दो जन्नतों का ज़िक्र है। उनमें से एक दुनिया की जन्नत है और वो है नमाज़ का स्वाद।"

★ ★ ★

नमाज़ में आनंद और लगन, उत्साह और प्रेम और विनम्रता शामिल होती है।

हज़रत पीर सिराजुल हक़ साहिब नोमानी (रज़ियल्लाहु अन्हु) फ़रमाते हैं:

एक दिन मैंने अर्ज़ किया: "हज़रत! नमाज़ में ध्यान, लज़्ज़त, दिलचस्पी, रुचि और गिड़गिड़ाहट कैसे पैदा हो सकती है?"तो फ़रमाया: "कभी मक़तब (मदरसे) में पढ़े हो?" मैंने कहा: "हाँ, पढ़ा हूँ।" फ़रमाया: "कभी उस्ताद ने कान पकड़वाए हैं?"मैंने कहा: "हाँ, पकड़वाते हैं।" फ़रमाया: "फिर क्या हाल हुआ?" मैंने कहा: "शुरू में तो सहन करता रहा, फिर जब थक गया, हाथ दुखने लगे, दर्द होने लगा और पसीने-पसीने हो गया तो रो पड़ा और आँखों से आँसू बह निकले।" फरमाया: "फिर क्या हुआ?" मैंने कहा: "फिर उस्ताद को रहम आ गया, उन्होंने कान छोड़ दिए, ग़लती माफ़ कर दी, प्यार किया और कहा जाओ पढ़ो।" फरमाया: "नमाज़ में भी यही हालत पैदा करो। जितनी देर लगे, उतनी देर नमाज़ में लगाओ और ' اهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيمَ ' (हमें सीधा रास्ता दिखा) को ज़्यादा पढ़ो। इतना पढ़ो कि हाथ-पाँव और पूरा बदन दुखने लगे, तो खुद पर रहम आएगा, थकावट भी होगी और फिर ख़ुदा के रहम की तरफ़ नज़र जाएगी। उसके बाद ख़ुदा भी रहम फरमाएगा और उसकी रहमत का समुद्र जोश मारने लगेगा। तब नमाज़ में ध्यान, विनम्रता, लज़्ज़त और सच्ची रुचि पैदा होगी।" लोग नमाज़ तो जल्दी पढ़ लेते हैं लेकिन बाद में हाथ उठाकर दुआ करते हैं और उसमें देर लगाते हैं। ध्यान कहीं होता है, हाथ कहीं और दिल किसी और तरफ़। फिर नमाज़ में ध्यान कहाँ से आए? ध्यान और रुचि, जिसे 'ईमानी मिठास' कहा जाता है, वह तो नमाज़ में होनी चाहिए।

(तज़किरतुल महदी पृष्ठ 150)

★ ★ ★

हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के फ़रमूदात

अपनी नमाज़ों की हिफ़ाज़त करें! उन्हें मज़बूत जड़ों पर स्थापित कर दें!

अल्लाह तआला फ़रमाता है: وَأْمُرْ أَهْلَكَ بِالصَّلٰوةِ وَاصْطَبِرْ عَلَيْهَا (सूरह ताहा: 133)
"और तू अपने घरवालों को नमाज़ की हिदायत देता रह और खुद भी उस पर डटा रह।"
इसलिए जैसे माँ-बाप, बहन-भाई एक-दूसरे को नमाज़ की नसीहत करें, वैसे ही हर अहमदी को भी चाहिए कि वह दूसरे अहमदी भाई को भी प्यार से नमाज़ की तरफ़ ध्यान दिलाता रहे। और जमाअत का जो निज़ाम इस काम पर नियुक्त है, उसे भी चाहिए कि वह लोगों को नमाज़ की तरफ़ बार-बार ध्यान दिलाता रहे। यही बात है जो मोमिनों को मज़बूत करती है।

(खुतबा जुमा 13 जुलाई 2007)

"नमाज़ें नेकी का बीज हैं इसलिए हमें भलाई के इस बीज को अपने दिलों में इस तरह लगाना होगा और इसकी इस तरह देखभाल करनी होगी कि कोई भी मौसम या बाहरी असर उसे बर्बाद न कर सके। अगर हमने नमाज़ों की हिफ़ाज़त नहीं की, तो जैसे खेत में उगने वाली घास-फूस फसल को दबा देती है, वैसे ही बुराइयाँ भी हमारी नेकी को दबा देंगी।

इसलिए हमारा काम यह है कि हम अपनी नमाज़ों की पूरी तरह से हिफ़ाज़त करें और उन्हें मज़बूत जड़ों पर स्थापित करें, ताकि ये नमाज़ें एक ऐसे घने और फलदार पेड़ की तरह बन जाएँ जो हमें हर बुराई से बचाए। सबसे पहले तो हमें नमाज़ को पूरी तरह से स्थापित करने की कोशिश करनी होगी, फिर ये नमाज़ें ही हमें भलाई पर टिकाए रखने का साधन बनेंगी। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने एक अहमदी की पहचान यही बताई है।"

(ख़ुत्बात-ए-मसरूर, जिल्द 6, पृष्ठ 65-66)

"बाजमाअत नमाज़ जहाँ इंसान के लिए व्यक्तिगत फ़ायदे का ज़रिया है, वहीं यह सामूहिक रूप से भी फ़ायदा देती है। लेकिन जो लोग मस्जिद में नमाज़ के लिए नहीं आते, या कुछ ऐसे लोग जो आकर आपसी मनमुटाव को दूर नहीं करते, आपस में अपनापन और व्यवहारिक संबंध नहीं बनाते, उन्हें नमाज़ से कोई फ़ायदा नहीं मिलता। क्योंकि नमाज़ का एक उद्देश्य इबादत के अलावा यह भी है कि आपस में एकता, अपनापन और मोहब्बत पैदा हो। इस सोच के साथ हमें अपनी नमाज़ों की हिफ़ाज़त करनी चाहिए और इसी सोच के साथ मस्जिद में आना चाहिए, ताकि हम सब मिलकर अल्लाह के सामने ऐसी नमाज़ अदा करने वाले बनें जो उसे पसंद आए और उसकी ख़ुशी हासिल करने वाले बनें।" (ख़ुत्बा जुमा, 15 जनवरी 2016)

मजलिस अंसारुल्लाह मुंबई(महाराष्ट्र)
का ग्रुप फोटो

मजलिस अंसारुल्लाह सागर(कर्नाटक)
द्वारा आयोजित तरबियती इजलास

मजलिस अंसारुल्लाह चेन्नई(तमिलनाडु)
के पदाधिकारियों के लिए रिफ्रेशर कोर्स

मजलिस अंसारुल्लाह नरार भीटा(म.प्र)
का ग्रुप फोटो

मजलिस अंसारुल्लाह शिवमोग्गा(कर्नाटक)
का तरबियती इजलास

मजलिस अंसारुल्लाह कोदियाथूर,
ज़िला कोझिकोड(केरल) पिकनिक का दृश्य